# कठोपनिषद् से एक श्लोक

## कठोपनिषद्, पंचमी वल्ली, श्लोक ११

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्
न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥

समस्त लोकों के नेत्ररूप, तेजोमय सूर्यदेव
नेत्रों के बाह्य दोषों से प्रभावित नहीं होते।
उसी प्रकार, समस्त भूतों अर्थात् जीवों की अन्तरात्मा
संसार के दुःख से प्रभावित नहीं होती, क्योंकि वह इससे अलिप्त है।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

कठोपनिषद् ५.११; श्लोक का यह हिन्दी भाषान्तर *The Nectar of Chanting* चतुर्थ संस्करण के २०१७ में किए गए पुनर्मुद्रण में पृ. १३३ पर [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९८४] दिए गए अंग्रेज़ी भाषान्तर पर आधारित है; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।